भजन

तर्ज–हुस्न वाले तेरा जवाब नही

मेरे सुभान तेरा जवाब नही
तू है कायम बिसात का मालिक

1–तुम ही मुतलक हो अपनी रूहो के,रूहे कुर्बान अपनी वाहिद की
इश्क खुशबू से तरबतर वो जहाँ, आस हरदम है साहेब की
खूबसूरत है जलवे दिलबर के, बेसकी आशिकी की ये रिमझिम

2–अपनी नूरी मोहोल की वाहेदत में,प्याले उनमाद जब छलकते है
गुफ्तगु नजरों से ही होती है,और बातूनी सहारे मिलते है
होश को होश भी नही रहती, नजरो से जब वो मय पिलाते है

3–मजलिसे मोमिनों फिदा उनपे, और है सारी खुदाई भी शामिल
तेरी दरगाह है नूर की बस्ती,नूर मे इश्क,इश्क मे उनमाद
पिऊ पिऊ गूंजता है हर कण में,मुन्तजिर तरबियत की यह सरगम